हिंदुत्व का चोला ओढ़कर जनता को ठगने में जुटीं विपक्षी पार्टियां

कांग्रेस, वामपंथियों और मुस्लिमों की चुनावी और सजा सजबन्धी रणनीति पर अगर ध्यान दिया जाए तो कहना गलत नहीं होगा कि वर्षों से एक षड्यंत्र के रूप में देश की हिन्दू जनता को बांटा गया और उसका उपयोग सजा हथियाने के लिए किया गया। ध्यान दीजिए, वर्तमान कांग्रेस पार्टी को जिस कालखंड में पैदा किया गया था, उस समय देश परतंत्र था और अंग्रेज इस देश की पावन भूमि को रौंदते हुए अपनी सजा के माध्यम से देश को लूटने में लगे थे। तत्कालीन दौर में देश के हिन्दू समाज ने जब अंग्रेजों की सजा और देश विरोधी कार्यों का विरोध शुरू किया तो बड़ी सफाई के साथ, तत्कालीन दौर के चंद कुलीन वर्गों के लोगों को साथ में लेकर 28 दिसंबर 1885 को अखिल भारतीय कांग्रेस नामक एक संगठन खड़ा किया गया। अंग्रेज शासकों के हितों और उनकी आकांक्षाओं की पूर्ति की खातिर बनाये गए कांग्रेस संगठन में एओ ह्यूम की जहां महत्वपूर्ण भूमिका रही, वहीं संगठन में दादा भाई नौरोजी और दिनशा वाचा को शामिल करके देश की हिन्दू जनता को साधने का काम शुरू किया गया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार के विकासवादी राजनीतिक एजेंडे को तोड़ने के लिए क्या भाजपा विरोधी शक्तियां अब हिंदुत्व का चोला ओढ़कर जनता को ठगने की तैयारी करने में जुट गयी हैं? स्वतंत्रता के बाद 'कहीं जाति और कहीं धर्म' के नाम पर जनता को बांट कर सत्ता की मलाई खाने वाले भाजपा विरोधी राजनीतिक दल क्या अब एक बार फिर अपनी रणनीति के लिए, उसी भगवा रंग का उपयोग के अवसर की प्रतीक्षा में हैं, जिस भगवा रंग के विरुद्ध कई वर्षों से भारत की जनता के बीच अभियान चलाते आ रहे थे? कहीं ऐसा तो नहीं, प्रधानमंत्री मोदी के विकासवाद को रोकने के लिए कांग्रेस, लेफ्ट और कट्टर मुस्लिम विचारधारा से जुड़े लोग अब हिंदुत्व के नाम पर देश की जनता को फिर से बरगला कर खोयी हुई सत्ता को पुन: प्राप्त करने के लिए एकत्रित हो कर काम पर जुट गए हैं?

यह वह प्रश्न हैं, जो गुजरात चुनाव के बाद पैदा हुए हैं। विगत दिसम्बर माह के मध्य गुजरात में हुए विधानसभा चुनाव अभियान के समय जहां गुजरात की 90 प्रतिशत हिन्दू जनसंख्या को एक बार फिर से जातियों में बांटा गया वहीं हिंदुत्व के नाम पर भी जनता को भाजपा सरकार के विरुद्ध भड़काने का पूरा प्रयास हुआ। गुजरात में वर्षों बाद विधानसभा चुनाव में सुनियोजित रूप से जहां हिन्दू जनता को पाटीदार, दलित, अगड़े-पिछड़े में विभक्त कर दिया गया, वहीं हिंदुत्व के भगवा चोले का उस कांग्रेस ने पूरी सफाई से भरपूर उपयोग भी किया, जिस हिंदुत्व को देश और जनता के लिए अत्यंत अहितकर बताने का वर्षों से अभियान चलाया जा रहा है। 2014 में भाजपा और नरेंद्र मोदी की विकासवादी राजनीति से पिटने के बाद कांग्रेस और उसका परोक्ष और अपरोक्ष रूप से साथ देने वाले वामपंथी, मुस्लिम और अन्य राजनीतिक दल, फिर से सत्ता प्राप्त करने के लिए हिन्दू और हिंदुत्व के एजेंडे को हथियाने के अभियान में दिन-रात एक करने में लग चुके हैं। सभी का लक्ष्य केवल और केवल यही है कि इस वर्ष होने वाले कई राज्यों के विधानसभा चुनाव से लेकर 2019 में होने वाले लोकसभा चुनाव में किसी भी तरह भाजपा की केंद्र से लेकर राज्य सरकारों को पराजित कर सत्ता पर फिर से कब्ज़ा किया जाए।

पिछले लोकसभा चुनाव में बुरी तरह मिली पराजय के बाद से कांग्रेस बौखलाई हुई है। उसकी बौखलाहट 2014 के बाद कई राज्यों में लगातार मिलती हार से बढ़ती ही जा रही है। कुछ ऐसा ही हाल स्वतंत्रता के बाद से कांग्रेस का परोक्ष और अपरोक्ष रूप से साथ देते आ रहे वामपंथी और मुस्लिम दलों का भी है। सभी के लिए आघात का सबसे बड़ा कारण यह भी है कि स्वतंत्रता के बाद से देश की हिन्दू जनता को जिस तरह उन्होंने जाति-धर्म के नाम पर बांट कर सत्ता चलायी थी, वही हिन्दू जनता भाजपा राज में जाति-धर्म के बंधनों से स्वयं को मुक्त करके, देश और समाज के विकास के लिए एकजुट हो रही है।

भाजपा राज में साकार होती 'रामराज' की अवधारणा से निपटना पिछले तीन वर्षों से भाजपा विरोधी शक्तियों को भारी पड़ता आ रहा है। गुजरात में कांग्रेस के नेताओं ने जिस तरह मंदिर-मंदिर चक्कर लगाए, जनेऊ धारण करने का स्वांग किया, खुद को शिव भक्त से लेकर तमाम देवी-देवताओं का भक्त साबित करने के प्रयास किए, वह कांग्रेस की उस नयी रणनीति के रूप में देखा जा सकता है, जिसमें जाति के नाम पर वोट हासिल करने के लिए जिग्नेश मेवानी, अल्पेश ठाकुर और हार्दिक पटेल जैसे लोगों का इस्तेमाल किया गया और खुद कांग्रेस के नेता अपने आप को जाति-धर्म से दूर रखकर, जनेऊ धारण करने का स्वांग रचते हुए मंदिर-मंदिर पहुंच कर खुद को हिन्दू बताते रहे। इस सन्दर्भ में ध्यान देने लायक बात यह भी है कि गुजरात में जो नेता खुद को हिन्दुओं का करीबी बताते हुए थक नहीं रहे थे, वही नेता केरल में गौकशी के समर्थन में होने वाले प्रदर्शनों और गौमांस खाने के लिए पिछले साल सड़कों पर झुंड लगाकर खड़े वामपंथियों के साथ भी मौजूद थे।

कांग्रेस, वामपंथियों और मुस्लिमों की चुनावी और सत्ता सम्बन्धी रणनीति पर अगर ध्यान दिया जाए तो कहना गलत नहीं होगा कि वर्षों से एक षड्यंत्र के रूप में देश की हिन्दू जनता को बांटा गया और उसका उपयोग सत्ता हथियाने के लिए किया गया। ध्यान दीजिए, वर्तमान कांग्रेस पार्टी को जिस कालखंड में पैदा किया गया था, उस समय देश परतंत्र था और अंग्रेज इस देश की पावन भूमि को रौंदते हुए अपनी सत्ता के माध्यम से देश को लूटने में लगे थे।

तत्कालीन दौर में देश के हिन्दू समाज ने जब अंग्रेजों की सत्ता और देश विरोधी कार्यों का विरोध शुरू किया तो बड़ी सफाई के साथ, तत्कालीन दौर के चंद कुलीन वर्गों के लोगों को साथ में लेकर 28 दिसंबर 1885 को अखिल भारतीय कांग्रेस नामक एक संगठन खड़ा किया गया। अंग्रेज शासकों के हितों और उनकी आकांक्षाओं की पूर्ति की खातिर बनाये गए कांग्रेस संगठन में एओ ह्यूम की जहां महत्वपूर्ण भूमिका रही, वहीं संगठन में दादा भाई नौरोजी और दिनशा वाचा को शामिल करके देश की हिन्दू जनता को साधने का काम शुरू किया गया।

प्रारंभिक दौर में कांग्रेस जहां अंग्रेज हितों के लिए काम करती रही, वहीं जब कांग्रेस संगठन में सदस्यों की संख्या डेढ़ करोड़ से ऊपर पहुंच गयी तो संगठन को चलाने वाले पर प्रश्न भी उठने लगे कि आखिर खुल कर अंग्रेजों के विरोध में क्यों नहीं उतरा जा रहा है? नतीजा यह निकला कि कांग्रेस के अंदर 'नरम' और गरम' नाम से दो दल बन गए। 1907 में टुकड़ों में बंटी कांग्रेस में गरम दल का नेतृत्व बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय एवं बिपिन चंद्र पाल ने किया, जो कि पूर्ण स्वराज की मांग उठाकर संघर्ष छेड़ना चाहते थे, वहीं नरम दल का नेतृत्व करने वाले गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता एवं दादा भाई नौरोजी जैसे लोग अंग्रेजों की सत्ता के अधीन रहकर ही देश में सिर्फ स्वशासन की व्यवस्था चाहते थे। वर्षों तक नरम-गरम दलों के बीच झूलती रही कांग्रेस, प्रथम विश्व युद्ध छिड़ने के बाद 1916 की लखनऊ में हुई बैठक में फिर एकजुट तो हो गयी, पर कांग्रेस की हालत और अपने हितों को समझते हुए अंग्रेजों ने एक नयी रणनीति पर काम शुरू कर दिया।

अंग्रेज शासकों को ज्ञात था कि अगर भारत की हिन्दू जनता एकमत होकर संगठित हो गयी तो उन्हें देश छोड़ना ही होगा, इसी लिए उस समय के तत्कालीन अंग्रेज शासकों ने देश की जनता को जाति और धर्म में तोड़ने के प्रयास शुरू कर दिये। भारत की जनता की एकजुटता को तोड़ने के षड्यंत्रों पर धीरे-धीरे जो काम शुरू हुआ, उसे डॉ. केशव राव बलीराम हेडगेवार जैसे लोगों ने महसूस करना शुरू किया। कांग्रेस के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ने वालों के साथ खड़े